अनुक्रमणिका

अ नु क्र म णि का

प्राक्कथन I - IV

ऋणनिर्देश V - VI

अनुक्रमणिका VII - XI

प्रथम अध्याय – साहित्यकार सुरेंद्र वर्मा का संक्षिप्त परिचय 1 – 17

विषय-प्रवेश

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 शिक्षा

1.1.3 नौकरी

1.1.4 कलाओं में रुचि

1.1.5 साहित्य लेखन में विविधता

1.1.6 पुरस्कार

1.2 सुरेंद्र वर्मा के व्यक्तित्व विविध पहलू

1.2.1 लेखक के रूप में अलग पहचान

1.2.2 नारी स्वतंत्रता के समर्थक

1.2.3 आत्म-प्रचार से रहित

1.2.4 स्पष्टवादी

1.2.5 प्रतिभासंपन्न

1.2.6 महानगरीय जीवन से गहरा संबंध

1.2.7 सृजनशील साहित्यकार

1.2.8 उपन्यासकार सुरेंद्र वर्मा

1.2.9 नाटककार सुरेंद्र वर्मा

1.3 कृतित्व अर्थात् साहित्य संसार

1.3.1 उपन्यास साहित्य

1.3.2 कहानी-संग्रह

1.3.3 कविता-संग्रह

1.3.4 नाट्य साहित्य

1.3.5 एकांकी साहित्य

1.3.6 व्यंग्य साहित्य

1.3.7 रूपांतर साहित्य

1.3.8 विवेचन

1.3.9 अन्य साहित्य

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय – सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों का विषयगत विवेचन **18 – 46**

विषय-प्रवेश

2.1 अंधेरे से परे

2.2 मुझे चाँद चाहिए

2.3 दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता

समन्वित निष्कर्ष

तृतीय अध्याय – विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन **47–72**

विषय-प्रवेश

3.1 समाज में नारी का स्थान

3.2 परिवार में नारी का स्थान

3.3 विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन

3.3.1 कैरियरीष्ठ नारी

3.3.2 विवाहपूर्व मातृत्व की चाहत रखनेवाली नारी

3.3.3 विद्रोही नारी

3.3.4 नौकरीपेशा नारी

3.3.5 स्वच्छंदी नारी

3.3.6 संघर्षशील नारी

3.3.7 विवाह बंधन से मुक्त नारी

3.3.8 आधुनिक नारी

3.3.9 उत्तरदायित्वहीन एवं खुदगर्ज नारी

3.3.10 स्वतंत्र अस्तित्व रखनेवाली नारी

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय – विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ **73–100**

विषय-प्रवेश

4.1 'समस्या' शब्द की व्युत्पत्ति

4.2 'समस्या' शब्द का अर्थ

4.3 'समस्या' शब्द की परिभाषा

4.4 नारी समस्याओं का चित्रण

4.5 विवेच्य उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ

4.5.1 अकेलेपन की समस्या

4.5.2 दहेज की समस्या

4.5.3 अंधविश्वास की समस्या

4.5.4 विश्वासघात की समस्या

4.5.5 प्रेम की समस्या

4.5.6 अतृप्त काम की समस्या

4.5.7 अशिक्षा और अज्ञान की समस्या

4.5.8 नारी स्वतंत्रता की समस्या

4.5.9 अर्थाभाव की समस्या

4.5.10 वैवाहिक जीवन में तान-तनाव की समस्या

4.5.11 मानसिक ग्रंथियों (मनोरुग्ण) की समस्या

निष्कर्ष

पंचम अध्याय – विवेच्य उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन 101–146

विषय–प्रवेश

5.1 शिल्प से तात्पर्य

5.2 उपन्यास के तत्त्वों की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

5.2.1 कथावस्तु

5.2.1.1 'अंधेरे से परे'

5.2.1.2 'मुझे चाँद चाहिए'

5.2.1.3 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता'

5.2.2 पात्र या चरित्र–चित्रण

5.2.2.1 'अंधेरे से परे'

5.2.2.1–1 प्रधान पात्र

5.2.2.1–2 गौण पात्र

5.2.2.2 'मुझे चाँद चाहिए'

5.2.2.2–1 प्रधान पात्र

5.2.2.2–2 गौण पात्र

5.2.2.3 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता'

5.2.2.3–1 प्रधान पात्र

5.2.2.3–2 गौण पात्र

5.2.3 संवाद या कथोपकथन

5.2.4 देश–काल वातावरण

5.2.5 भाषा शैली

5.2.5.1 विवेच्य उपन्यास : भाषिक प्रयोग

5.2.5.1–1 बोलचाल की भाषा का प्रयोग

5.2.5.1–2 चित्रात्मक भाषा का प्रयोग

5.2.5.1–3 प्रतीकात्मक भाषा

5.2.5.2 विवेच्य उपन्यास : शब्द योजना

5.2.5.2-1 संस्कृत शब्द

5.2.5.2-2 अरबी शब्द

5.2.5.2-3 फारसी शब्द

5.2.5.2-4 अँग्रेजी शब्द

5.2.5.2-5 द्विरुक्त शब्द

5.2.5.2-6 जोड़े के साथ आये हुए सादृश्य शब्द

5.2.5.2-7 ध्वन्यार्थक शब्द

5.2.5.3 विवेच्य उपन्यास : वाक्य विन्यास के विविध प्रयोग

5.2.5.3-1 डॉट वाले अंश

5.2.5.3-2 छोटे-छोटे वाक्य

5.2.5.3-3 अंग्रेजी-हिंदी वाक्य

5.2.5.3-4 पूर्ण अंग्रेजी वाक्य

5.2.5.4 विवेच्य उपन्यासों मे प्रयुक्त शैली के विविध आयाम

5.2.5.4-1 आत्मकथात्मक शैली

5.2.5.4-2 संवाद शैली

5.2.5.4-3 भाषण शैली

5.2.5.4-4 डायरी शैली

5.2.5.4-5 काव्यात्मक एवं गीति शैली

5.2.5.4-6 पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) शैली

5.2.5.4-7 वर्णनात्मक शैली

निष्कर्ष

उपसंहार 147-154

संदर्भ ग्रंथ-सूची 155-162

❑❑❑❑